



‘द बिग बैंग: आकाश में लिखी एक खोज’ विषयक व्याख्यान के माध्यम से आईआईटी भुवनेश्वर ने ब्रह्मांड के ब्रह्मांडीय इतिहास को समझने का प्रयास किया

भुवनेश्वर, 3 अक्टूबर 2026: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने 29 सितंबर 2026 को “द बिग बैंग: ए डिस्कवरी रिटन इन द स्काई” विषय पर एक संस्थान सेमिनार का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध रेडियो खगोलशास्त्री एवं भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के पूर्व निदेशक प्रोफेसर रवि सुब्रह्मण्यन आमंत्रित वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

अपने स्वागत संबोधन में आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक ने इस बात पर जोर दिया कि वास्तविक शिक्षा केवल अंकों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं होती। उन्होंने बताया कि संस्थान विशेषज्ञों द्वारा दिए जाने वाले बाह्य व्याख्यानों तथा साइकिलिंग, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे जीवन कौशल को विद्यार्थियों के अनुभव का हिस्सा बनाकर उनके सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देता है। उन्होंने कहा कि कक्षा के बाहर की ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के करियर निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने अपने अनुभव को साझा करते हुए बताया कि उद्यमिता के माध्यम से राष्ट्र निर्माण पर एक अतिथि व्याख्यान से प्रेरित होकर उन्होंने पीएचडी के बाद दो वर्ष तक उद्यमिता के क्षेत्र में कार्य किया था। उन्होंने कहा कि बिग बैंग पर आयोजित आज का यह सत्र विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को ब्रह्मांड से जुड़े मूलभूत प्रश्नों तथा इसके अन्वेषण में प्रयुक्त प्रौद्योगिकियों को समझने और तलाशने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है।

रेडियो खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान के क्षेत्र में लगभग 45 वर्षों के अपने शोध अनुभव के आधार पर प्रोफेसर सुब्रह्मण्यन ने बताया कि किस प्रकार खगोलीय अवलोकनों की बढ़ती सटीकता ने ब्रह्मांड के बारे में हमारी समझ को बदल दिया है। उन्होंने श्रोताओं को आकाशगंगा की संरचना और आकाशगंगाओं के ब्रह्मांडीय जाल से लेकर उन प्रमाणों तक की यात्रा कराई, जो यह दर्शाते हैं कि अरबों वर्षों के दौरान ब्रह्मांड का किस प्रकार विकास हुआ है।

व्याख्यान का एक प्रमुख केंद्र कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड (CMB) रहा—एक अत्यंत मंद विकिरण, जो प्रारंभिक, अत्यधिक गर्म और सघन ब्रह्मांड को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण खिड़की प्रदान करता है। प्रोफेसर सुब्रह्मण्यन ने बताया कि CMB, आकाशगंगाओं और अंतर-आकाशगंगीय गैस के अवलोकनों ने मिलकर वैज्ञानिकों को ब्रह्मांडीय संरचनाओं के विकास को समझने और पुनर्निर्मित करने में किस प्रकार सहायता की है। उन्होंने खगोल विज्ञान में इंजीनियरिंग और तकनीकी नवाचार की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला। इस संदर्भ में उन्होंने अत्यंत मंद ब्रह्मांडीय संकेतों का पता लगाने में सक्षम उपकरणों के डिजाइन से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। भविष्य की दिशा पर चर्चा करते हुए उन्होंने डार्क एनर्जी, प्रथम तारों और आकाशगंगाओं के निर्माण तथा ब्रह्मांडीय संरचनाओं के विकास को समकालीन अनुसंधान के प्रमुख प्रश्नों में शामिल बताया। सेमिनार का समापन एक संवादात्मक प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ, जिसमें विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को प्रतिष्ठित वैज्ञानिक के साथ सीधे संवाद करने और अपने प्रश्न पूछने का अवसर मिला। कार्यक्रम का समन्वय प्रोफेसर-प्रभारी डॉ. शांतनु पात्रा ने किया।
